THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

भारत की विदेश नीति एवं डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के विचार: एक ऐतिहासिक एवं समकालीन विश्लेषण

एडवोकेट (डॉ.) राजेंद्र कुमार वर्मा
प्रदेश अध्यक्ष, अम्बेडकर सेना राजस्थान
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
श्री गुरु नानक कन्या महाविद्यालय केसरीसिंहपुर श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सारांश (Abstract)

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर भारतीय राजनीतिक चिंतन के ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और संवैधानिक लोकतंत्र के साथ-साथ भारत की विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी अपने विचार व्यक्त किए। सामान्यतः अम्बेडकर का अध्ययन सामाजिक समानता, जाति उन्मूलन और संविधान निर्माण के संदर्भ में किया जाता है, लेकिन उनके संसदीय भाषणों और राजनीतिक दस्तावेजों में भारत की विदेश नीति से संबंधित महत्वपूर्ण विचार भी उपलब्ध हैं।

26 अगस्त 1954 को राज्यसभा में *International Situation* विषय पर दिए गए भाषण में अम्बेडकर ने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति के तीन प्रमुख आधारों—शांति, साम्यवाद और स्वतंत्र लोकतंत्र का सह-अस्तित्व तथा SEATO के प्रति विरोध—का विश्लेषण किया। उन्होंने विदेश नीति में सिद्धांतों, भौगोलिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यावहारिक राष्ट्रीय हितों के महत्व पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, अनुसूचित जाति फेडरेशन के घोषणापत्र में उन्होंने पाकिस्तान, कश्मीर, चीन, संयुक्त राष्ट्र और भारत की आर्थिक एवं सामरिक क्षमता के संबंध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी विचारों का ऐतिहासिक विश्लेषण करना तथा समकालीन भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि राष्ट्रीय हित, सामरिक आत्मनिर्भरता, पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण संबंध और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण जैसे प्रश्न आज भी भारतीय विदेश नीति के महत्वपूर्ण आधार हैं।

मुख्य शब्द: डॉ. भीमराव अम्बेडकर, भारतीय विदेश नीति, राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय संबंध, पाकिस्तान, चीन, कश्मीर, लोकतंत्र, सामरिक स्वायत्तता।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों, भौगोलिक परिस्थितियों, आर्थिक आवश्यकताओं, राजनीतिक व्यवस्था और सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताओं से प्रभावित होती है। विदेश नीति केवल दूसरे देशों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय संप्रभुता, आर्थिक विकास, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण साधन भी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने अनेक विदेश नीति संबंधी चुनौतियाँ थीं। देश का विभाजन, पाकिस्तान के साथ संबंध, कश्मीर का प्रश्न, चीन के साथ सीमा संबंधी परिस्थितियाँ, शीतयुद्ध की राजनीति तथा संयुक्त राष्ट्र में भारत की भूमिका जैसे विषय तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व के सामने महत्वपूर्ण प्रश्न थे।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने इन मुद्दों पर केवल सामान्य राजनीतिक टिप्पणी नहीं की, बल्कि संसद और अपने राजनीतिक घोषणापत्रों के माध्यम से विदेश नीति के सिद्धांतों की आलोचनात्मक समीक्षा भी की।

विशेष रूप से 26 अगस्त 1954 को राज्यसभा में दिया गया उनका *International Situation* भाषण विदेश नीति पर उनके चिंतन का एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है। इसमें उन्होंने शांति, सह-अस्तित्व, सामरिक सुरक्षा और भारत की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखकर विदेश नीति निर्धारित करने की आवश्यकता पर विचार किया। इस भाषण का मूल पाठ भारत सरकार द्वारा प्रकाशित *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches*, Volume 15 में उपलब्ध है।

2. शोध समस्या (Statement of the Research Problem)

डॉ. अम्बेडकर के राजनीतिक और सामाजिक विचारों पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, लेकिन उनके विदेश नीति संबंधी विचारों को भारतीय अंतरराष्ट्रीय संबंधों के व्यापक संदर्भ में अपेक्षाकृत कम स्थान मिला है।

विशेष रूप से यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि अम्बेडकर ने स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के किन सिद्धांतों की आलोचना की थी और उनकी आलोचना के पीछे कौन-सी राष्ट्रीय, सामरिक और आर्थिक चिंताएँ थीं।

भारत की विदेश नीति में शांति, सहयोग, रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करना आज भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। इसलिए यह अध्ययन निम्नलिखित शोध समस्या पर केंद्रित है:

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

क्या डॉ. अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी विचार वर्तमान भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, पड़ोसी देशों के साथ संबंधों, सामरिक स्वायत्तता तथा वैश्विक कूटनीति के लिए उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करते हैं?

3. शोध के उद्देश्य

1. डॉ. अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी विचारों का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
2. 1954 के उनके संसदीय भाषण का विश्लेषण करना।
3. पाकिस्तान, कश्मीर और चीन के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आर्थिक विकास के बीच संबंधों को समझना।
5. भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांतों के साथ अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. समकालीन भारतीय विदेश नीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

4. शोध अंतराल (Research Gap)

अम्बेडकर के विचारों पर उपलब्ध अधिकांश अकादमिक अध्ययन सामाजिक न्याय, जाति व्यवस्था, संविधान, लोकतंत्र और आर्थिक चिंतन पर केंद्रित रहे हैं। उनके विदेश नीति संबंधी संसदीय भाषणों और राजनीतिक घोषणापत्रों का स्वतंत्र एवं समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में विश्लेषण किए जाने की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

इस शोध का विशिष्ट अध्ययन निम्नलिखित अंतरालों पर केंद्रित है:

1. अम्बेडकर के 1954 के *International Situation* भाषण का विदेश नीति के सैद्धांतिक संदर्भ में विश्लेषण।
2. भारत की भौगोलिक स्थिति और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संबंधों पर उनके विचारों का अध्ययन।
3. पाकिस्तान और चीन संबंधी उनके विचारों का ऐतिहासिक एवं सामरिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन।
4. राष्ट्रीय हित और अंतरराष्ट्रीय आदर्शों के बीच संतुलन संबंधी उनके दृष्टिकोण का अध्ययन।
5. वर्तमान भारतीय विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता, आर्थिक विकास और सुरक्षा के संदर्भ में उनके विचारों की उपयोगिता का परीक्षण।

इस प्रकार यह शोध अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी विचारों को उनके मूल राजनीतिक दस्तावेजों के आधार पर समकालीन भारतीय विदेश नीति के साथ जोड़ने का प्रयास करता है।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

5. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत:

- Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Volume 15.
- Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Volume 17, Part I.
- राज्यसभा में 26 अगस्त 1954 को दिया गया *International Situation* भाषण।
- अनुसूचित जाति फेडरेशन का राजनीतिक घोषणापत्र।

द्वितीयक स्रोत:

- भारतीय विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रकाशन।
- भारतीय विदेश नीति से संबंधित अकादमिक पुस्तकें।
- अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रकाशित शोध-पत्र।
- भारतीय राजनीतिक एवं सामरिक चिंतन से संबंधित साहित्य।

6. भारत की विदेश नीति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को एक ऐसी विदेश नीति की आवश्यकता थी, जो उसकी संप्रभुता, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास को सुनिश्चित कर सके।

स्वतंत्र भारत की विदेश नीति में निम्नलिखित सिद्धांत महत्वपूर्ण रहे हैं:

1. गुटनिरपेक्षता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता।
2. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
3. पंचशील के सिद्धांत।
4. उपनिवेशवाद और नस्लवाद का विरोध।
5. अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान।
6. संयुक्त राष्ट्र और बहुपक्षीय संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

7. राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा।
8. विकासशील देशों के साथ सहयोग।

भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार विदेश नीति के दो प्रमुख लक्ष्य राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि हैं। इसके साथ रणनीतिक स्वायत्तता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और पड़ोसी देशों के साथ सहयोग भी महत्वपूर्ण आधार हैं।

इस ऐतिहासिक संदर्भ में अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

7. डॉ. अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी प्रमुख विचार

7.1 विदेश नीति में स्पष्ट सिद्धांतों का महत्व

अम्बेडकर ने 26 अगस्त 1954 को राज्यसभा में अपने भाषण की शुरुआत विदेश नीति के सिद्धांतों की आवश्यकता पर बल देते हुए की थी।

उन्होंने कहा:

“Principles are undoubtedly very valuable, but I take it politicians have a great dislike for principles, particularly politicians who are dealing with foreign policy.”

अर्थात विदेश नीति में सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन राजनीतिक नेतृत्व कई बार प्रत्येक परिस्थिति में अलग-अलग निर्णय लेने की प्रवृत्ति रखता है।

(Ambedkar, 1954, p. 874)

अम्बेडकर का तर्क था कि विदेश नीति केवल तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के आधार पर निर्धारित नहीं होनी चाहिए। उसके पीछे स्पष्ट राष्ट्रीय उद्देश्य और दीर्घकालिक सिद्धांत होने चाहिए।

यह विचार आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में तेजी से परिवर्तन होता है। ऐसे समय में विदेश नीति में निरंतरता और परिस्थितियों के अनुरूप व्यावहारिक लचीलापन दोनों आवश्यक हैं।

7.2 राष्ट्रीय हित और राष्ट्रीय सुरक्षा

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष राष्ट्रीय हितों की प्राथमिकता है।

अनुसूचित जाति फेडरेशन के घोषणापत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से भारत के राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने की बात कही थी।

उन्होंने लिखा:

"India's first duty should be to herself."

अर्थात भारत का पहला कर्तव्य स्वयं भारत के प्रति होना चाहिए।

(Ambedkar, n.d., *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches*, Vol. 17, Part I, p. 397)

इस कथन का आशय यह था कि भारत को अंतरराष्ट्रीय प्रश्नों पर अपनी भूमिका निर्धारित करते समय अपनी आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

अम्बेडकर के अनुसार किसी दूसरे देश के अंतरराष्ट्रीय हितों के समर्थन में अपनी सीमित राष्ट्रीय क्षमताओं का अत्यधिक उपयोग करने से पहले भारत को अपनी आंतरिक शक्ति और सुरक्षा को मजबूत करना चाहिए।

यह विचार वर्तमान भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय हित आधारित विदेश नीति के संदर्भ में अध्ययन योग्य है।

7.3 शांति और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन

अम्बेडकर ने शांति की नीति का विरोध नहीं किया, बल्कि उन्होंने शांति की अवधारणा को राष्ट्रीय सुरक्षा की वास्तविकताओं के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता पर बल दिया।

1954 के राज्यसभा भाषण में उन्होंने तत्कालीन सरकार की विदेश नीति के तीन प्रमुख आधारों का उल्लेख किया:

- शांति।
- साम्यवाद और स्वतंत्र लोकतंत्र का सह-अस्तित्व।
- SEATO के प्रति विरोध।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

उन्होंने इन सिद्धांतों की व्यावहारिक उपयोगिता और भारत की सुरक्षा पर उनके संभावित प्रभावों का परीक्षण किया।

उनका मानना था कि शांति की नीति अपनाते समय यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि राष्ट्र की सुरक्षा और संप्रभुता किसी प्रकार के जोखिम में न पड़े।

इस संदर्भ में उनका प्रश्न महत्वपूर्ण था कि शांति की स्थापना किन परिस्थितियों में और किस कीमत पर हो रही है।

यह विचार वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है, जब भारत को सीमा सुरक्षा, आतंकवाद, क्षेत्रीय संघर्ष और बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

7.4 भौगोलिक परिस्थितियाँ और विदेश नीति

अम्बेडकर ने विदेश नीति के निर्धारण में भौगोलिक परिस्थितियों के महत्व पर विशेष बल दिया।

उन्होंने कहा:

“Each country’s foreign policy must vary with its geographical location in relation to the factor with which it is dealing.”

अर्थात प्रत्येक देश की विदेश नीति उसकी भौगोलिक स्थिति और उससे संबंधित परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित होनी चाहिए।

(Ambedkar, 1954, p. 879)

यह उनके विदेश नीति चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उनका मानना था कि किसी यूरोपीय या दूरस्थ देश के लिए उपयोगी विदेश नीति भारत के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं हो सकती।

भारत की भौगोलिक स्थिति, उसके पड़ोसी देश, समुद्री सीमाएँ और सामरिक परिस्थितियाँ उसकी विदेश नीति को प्रभावित करती हैं।

वर्तमान समय में हिंद महासागर क्षेत्र, चीन के साथ सीमा संबंध, दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के संदर्भ में यह विचार महत्वपूर्ण है।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

7.5 पाकिस्तान और कश्मीर के संदर्भ में अम्बेडकर के विचार

अम्बेडकर ने पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों को एक महत्वपूर्ण विदेश नीति संबंधी प्रश्न माना।

अनुसूचित जाति फेडरेशन के घोषणापत्र में उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी शत्रुता के स्थान पर मैत्रीपूर्ण संबंधों की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने भारत के विभाजन को एक स्थापित राजनीतिक वास्तविकता के रूप में स्वीकार करने तथा दोनों देशों के बीच अच्छे पड़ोसी संबंध विकसित करने का प्रस्ताव रखा।

कश्मीर के प्रश्न पर उन्होंने क्षेत्रीय विभाजन का एक विशेष प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, जिसमें घाटी के निवासियों की इच्छा को ध्यान में रखने की बात भी शामिल थी। यह उनका ऐतिहासिक राजनीतिक प्रस्ताव था, न कि वर्तमान भारत की आधिकारिक नीति।

इस प्रस्ताव को उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों और अम्बेडकर के दृष्टिकोण के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

(Ambedkar, n.d., Vol. 17, Part I, pp. 396–397)

इससे स्पष्ट होता है कि अम्बेडकर भारत-पाकिस्तान संबंधों को केवल भावनात्मक आधार पर नहीं, बल्कि राजनीतिक स्थिरता, क्षेत्रीय शांति और राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण से देखते थे।

7.6 चीन के प्रति दृष्टिकोण

अम्बेडकर ने चीन के संबंध में भी भारत की विदेश नीति की आलोचनात्मक समीक्षा की थी।

उनका मानना था कि भारत को चीन के अंतरराष्ट्रीय हितों के समर्थन में अपनी प्राथमिकताओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

उन्होंने विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र में चीन के प्रतिनिधित्व और भारत-अमेरिका संबंधों के संदर्भ में तत्कालीन सरकार की नीति पर प्रश्न उठाए।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

उनका तर्क था कि भारत को अपनी अंतरराष्ट्रीय स्थिति, आर्थिक सहायता और तकनीकी विकास की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना चाहिए।

1954 के भाषण में उन्होंने तिब्बत और भारत की उत्तरी सुरक्षा सीमाओं के संदर्भ में भी चिंता व्यक्त की थी।

उनके इन विचारों को उस समय की शीतयुद्ध परिस्थितियों और 1950 के दशक की अंतरराष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में समझना चाहिए।

आज भारत-चीन संबंधों में सीमा विवाद, व्यापार, क्षेत्रीय प्रभाव और वैश्विक सहयोग जैसे अनेक आयाम मौजूद हैं। इस संदर्भ में अम्बेडकर का भौगोलिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय सुरक्षा पर बल देना अध्ययन योग्य है।

7.7 लोकतंत्र और अंतरराष्ट्रीय संबंध

अम्बेडकर के राजनीतिक दर्शन में लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्थान था। उनका विश्वास था कि राजनीतिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक संस्थाओं की सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की स्थिरता के लिए आवश्यक है।

उन्होंने 1954 के भाषण में साम्यवाद और स्वतंत्र संसदीय लोकतंत्र के सह-अस्तित्व की संभावनाओं पर प्रश्न उठाए थे।

उनका दृष्टिकोण तत्कालीन शीतयुद्ध की राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित था। इसलिए उनके विचारों का अध्ययन करते समय उस ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है।

वर्तमान समय में भारत विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देशों के साथ संबंध बनाए रखता है। ऐसे में लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय हितों और व्यावहारिक कूटनीति के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

7.8 आर्थिक विकास और सामरिक आत्मनिर्भरता

अम्बेडकर ने विदेश नीति को देश की आंतरिक आर्थिक स्थिति से अलग करके नहीं देखा।

अनुसूचित जाति फेडरेशन के घोषणापत्र में उन्होंने भारत की आर्थिक और सामरिक क्षमता मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

उनके अनुसार भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी भूमिका निभाने से पहले अपनी आर्थिक शक्ति, संसाधनों और राष्ट्रीय क्षमताओं का विकास करना चाहिए।

यह दृष्टिकोण आज के संदर्भ में आर्थिक कूटनीति, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी आत्मनिर्भरता, रक्षा उत्पादन और व्यापारिक संबंधों के महत्व को समझने में उपयोगी है।

8. अम्बेडकर के विदेश नीति संबंधी विचारों एवं वर्तमान भारतीय विदेश नीति का तुलनात्मक अध्ययन

अम्बेडकर के विचारों और वर्तमान भारतीय विदेश नीति के बीच कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ तथा नीतिगत अंतर दिखाई देते हैं।

आधार	अम्बेडकर का दृष्टिकोण	समकालीन भारतीय विदेश नीति
राष्ट्रीय हित	भारत के हितों को प्राथमिकता	राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि
शांति	शांति के साथ सुरक्षा आवश्यक	शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं कूटनीतिक समाधान
पड़ोसी देश	अच्छे पड़ोसी संबंधों पर बल	पड़ोसी प्रथम नीति
चीन	भौगोलिक और सामरिक परिस्थितियों पर विशेष ध्यान	सीमा सुरक्षा और आर्थिक-कूटनीतिक संबंध
पाकिस्तान	स्थायी शत्रुता के स्थान पर मैत्रीपूर्ण संबंधों की आवश्यकता	सुरक्षा, संवाद और क्षेत्रीय स्थिरता
अंतरराष्ट्रीय संगठन	भारत की स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय भूमिका	संयुक्त राष्ट्र एवं बहुपक्षीय संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी
आर्थिक क्षमता	अंतरराष्ट्रीय प्रभाव से पहले आंतरिक शक्ति का विकास	आर्थिक कूटनीति, तकनीकी विकास और आत्मनिर्भरता
रणनीतिक निर्णय	राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय	रणनीतिक स्वायत्तता

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

यह तुलना वैचारिक है। अम्बेडकर के ऐतिहासिक प्रस्तावों को वर्तमान सरकार की नीतियों के समान नहीं माना जाना चाहिए। भारत की वर्तमान विदेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा, समृद्धि, रणनीतिक स्वायत्तता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रमुख उद्देश्य हैं।

9. समकालीन भारतीय विदेश नीति में अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

9.1 रणनीतिक स्वायत्तता

अम्बेडकर का राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने का विचार वर्तमान रणनीतिक स्वायत्तता की अवधारणा से जोड़ा जा सकता है। भारत आज विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंध स्थापित करता है।

9.2 पड़ोसी देशों के साथ संबंध

भारत की भौगोलिक परिस्थितियों को विदेश नीति का आधार मानने वाला अम्बेडकर का विचार दक्षिण एशिया के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और पाकिस्तान के साथ संबंध भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक प्रगति को प्रभावित करते हैं।

9.3 राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा क्षमता

अम्बेडकर के विचारों के अनुसार शांति की स्थापना के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में सीमा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता महत्वपूर्ण हैं।

9.4 आर्थिक कूटनीति

अम्बेडकर ने देश की आर्थिक शक्ति को अंतरराष्ट्रीय प्रभाव से जोड़ा था। आज भारत के लिए विदेशी निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी सहयोग, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भागीदारी महत्वपूर्ण हैं।

9.5 लोकतांत्रिक मूल्यों की भूमिका

अम्बेडकर का लोकतांत्रिक चिंतन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मानवाधिकार, समानता, स्वतंत्रता और बहुपक्षीय सहयोग के महत्व को समझने में सहायक है।

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

10. वर्तमान भारतीय विदेश नीति के लिए व्यावहारिक सुझाव

अम्बेडकर के विचारों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

1. **राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता:** अंतरराष्ट्रीय समझौतों और कूटनीतिक निर्णयों में भारत की दीर्घकालिक आर्थिक एवं सामरिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए।

2. **पड़ोसी देशों के साथ सहयोग:** दक्षिण एशिया में व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया जाए।

3. **सामरिक आत्मनिर्भरता:** रक्षा उत्पादन, अनुसंधान, साइबर सुरक्षा और आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में घरेलू क्षमता विकसित की जाए।

4. **आर्थिक कूटनीति:** भारत के निर्यात, विदेशी निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा दिया जाए।

5. **अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में प्रभावी भागीदारी:** संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं में भारत की भूमिका को मजबूत किया जाए।

6. **शांति और सुरक्षा का संतुलन:** अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के साथ राष्ट्रीय संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा सुनिश्चित की जाए।

7. **लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण:** विदेश नीति में मानवाधिकार, समानता, स्वतंत्रता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को ध्यान में रखा जाए।

8. **शिक्षा एवं शोध को बढ़ावा:** भारतीय विश्वविद्यालयों में अम्बेडकर के अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक चिंतन और विदेश नीति संबंधी लेखन पर स्वतंत्र शोध को प्रोत्साहित किया जाए।

11. निष्कर्ष

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का विदेश नीति संबंधी चिंतन भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण, किंतु अपेक्षाकृत कम चर्चित पक्ष है। सामान्यतः उन्हें भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार, सामाजिक न्याय के समर्थक और जातिगत भेदभाव के विरोधी के रूप में जाना जाता है। किंतु उनके संसदीय भाषणों और राजनीतिक घोषणापत्रों का

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने स्वतंत्र भारत की विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय संबंधों और आर्थिक शक्ति के प्रश्नों पर भी गंभीर विचार प्रस्तुत किए थे।

26 अगस्त 1954 को राज्यसभा में दिया गया उनका *International Situation* भाषण विदेश नीति के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। इस भाषण में उन्होंने शांति, सह-अस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियों के आधार पर तत्कालीन विदेश नीति की समीक्षा की। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी राष्ट्र की विदेश नीति उसकी भौगोलिक स्थिति और सामरिक आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए।

पाकिस्तान, कश्मीर और चीन के संदर्भ में उनके विचार उस समय की राजनीतिक एवं अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित थे। उनके कुछ प्रस्तावों और आकलनों से असहमति संभव है, लेकिन उनका मूल आग्रह यह था कि भारत को अंतरराष्ट्रीय मामलों में अपनी स्वतंत्र समझ विकसित करनी चाहिए और राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

समकालीन भारत में रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक कूटनीति, पड़ोसी देशों के साथ सहयोग और वैश्विक संस्थाओं में प्रभावी भागीदारी जैसे विषय विदेश नीति के महत्वपूर्ण आयाम हैं। इन प्रश्नों पर अम्बेडकर के विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन उपयोगी वैचारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अम्बेडकर का विदेश नीति संबंधी चिंतन भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखने की प्रेरणा देता है, जो अपनी आंतरिक आर्थिक एवं सामाजिक शक्ति को विकसित करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र, उत्तरदायी और प्रभावशाली भूमिका निभाए। उनके विचारों की वास्तविक प्रासंगिकता उन्हें वर्तमान परिस्थितियों में आलोचनात्मक ढंग से समझने और राष्ट्रीय हित, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा वैश्विक सहयोग के बीच संतुलन स्थापित करने में निहित है।

12. संदर्भ ग्रंथ सूची (References – APA 7th Edition)

Ambedkar, B. R. (1946). *Pakistan or the partition of India* (3rd ed.). Thacker & Co.

Ambedkar, B. R. (1954, August 26). International situation. In *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and speeches* (Vol. 15, pp. 874–886). Dr. Ambedkar Foundation, Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India.

Ambedkar, B. R. (n.d.). Scheduled Caste's emancipation—Draft manifesto. In *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and speeches* (Vol. 17, Part I, pp. 385–398). Dr. Ambedkar Foundation, Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India.

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024

Government of India, Ministry of External Affairs. (n.d.). *India's foreign policy*. https://www.mea.gov.in/indian-foreign-policy.htm

Government of India, Ministry of External Affairs. (n.d.). *Dr. B. R. Ambedkar*. https://www.mea.gov.in/ambedkar.htm

Jaffrelot, C. (2005). *Dr Ambedkar and untouchability: Analysing and fighting caste*. Permanent Black.

Rodrigues, V. (Ed.). (2002). *The essential writings of B. R. Ambedkar*. Oxford University Press.

Zelliot, E. (1992). *From untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar movement*. Manohar.

THE INTERNATIONAL ADVANCED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
International Indexed Journal | Multi-Disciplinary Refereed Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal
World Wide Most Trusted Research Publication Platform Since 2024